परम पूज्य जागृतिकारी संत उपाध्याय

श्री 108 नयनसागर मुनिराज पूजन

श्री नयनसागर गुरुवर का, करते हम गुणगान,
श्रद्धा सुमन चढ़ा रहे, गुरु चरणों में आन।
तिष्ठो-तिष्ठो प्रेम से उर आसन पर आज,
पूजा गुरुवर की रचूं, पूर्ण करो सब काज।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरो अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इत्याह्वननम्।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरो अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरो अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जड़ तन को साफ किया मैंने, पर मन का मैल न धो पाया,
भावों का निर्मल जल लेकर, गुरुवर के चरणों में आया।
तुमको अर्पित जल करता हूं, काटो गुरुवर भव के बंधन,
श्री नयनसागर गुरुवर को, शत् शत् वंदन शत् अभिनन्दन।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरवे जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविधि लेप किये तन पर, फिर भी न मिटी तन की ज्वाला,
तन का संताप मिटाने को, मैंने क्या-क्या नहीं कर डाला।
चंदन चरणों में अर्पित हैं, काटों गुरुवर भव के बंधन,
श्री नयनसागर गुरुवर को, शत् शत् वंदन शत् अभिनन्दन।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरवे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार दुःखों का सागर हैं, फिर भी इसमें फंसता जाता,
मोह माया की जंजीरों में, इस कारण ही जकड़ा जाता।
अक्षय पद को अक्षत लाया, काटो गुरुवर भव के बंधन,
श्री नयनसागर गुरुवर को, शत् शत् वंदन शत् अभिनन्दन।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरवे अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रागादि काम के चक्कर में, इन्द्रिय की दास बना फिरता,
पर क्षीण और मुंह दीन तभी, मैं इत्र फुलेल मला करता।
चरणों में पुष्प समर्पित हैं, काटो गुरुवर भव के बंधन,
श्री नयनसागर गुरुवर को, शत् शत् वंदन शत् अभिनन्दन।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरवे कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान और व्यंजन से नित, ये उदर भरा फिर भी रीता,
जिसने रसना पर वश रखा, समझो उसने जग को जीता।
नैवेद्य चढ़ाती क्षुधा हरो, काटो गुरुवर भव के बंधन,
श्री नयनसागर गुरुवर को, शत् शत् वंदन शत् अभिनन्दन।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरवे क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह अंधकार की छाया में, मंजिल ही नजर नहीं आती,
फैले प्रकाश मिट जाये तम, जब जले गुरु जग-जग बाती।
मोह तिमिर मिटाने दीप धरूँ, काटो गुरुवर भव के बंधन,

श्री नयनसागर गुरुवर को, शत् शत् वंदन शत् अभिनन्दन।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरवे मोहअन्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का जाल पड़ा मुझ पर, एक बार फंसा न निकल पाया,
कैसे काटूँ इन कर्मों को, यह प्रश्न नहीं हल कर पाया।
मैं धूप चढ़ा अर्चन करता, काटो गुरुवर भव के बंधन,
श्री नयनसागर गुरुवर को, शत् शत् वंदन शत् अभिनन्दन।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरवे अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल की इच्छा से खूब फिरा, चौरासी हैं चक्कर खाए,
बादाम सुपारी नारंगी, नानाविधि सबने बतलाऐ।
हैं मोक्ष महाफल की इच्छा, काटो गुरुवर भव के बंधन,
श्री नयनसागर गुरुवर को, शत् शत् वंदन शत् अभिनन्दन।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरवे महामोक्ष फल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन तंदुल पुष्प चरू मैं, धूप फल अर्घ धरूँ,
अष्टम वसुधा पाने गुरुवर, चरणों में नित-नित शीश धरूँ।
सब सुखी रहे जग के प्राणी, काटो गुरुवर भव के बंधन,
श्री नयनसागर गुरुवर को, शत् शत् वंदन शत् अभिनन्दन।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरवे अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

मुनिराज तुम्हारी पूजन से, संकट दल सब टल जाते हैं।

इसीलिए समर्पित जयमाला, चरणों में तुम्हें चढ़ाते हैं।।
बनकर के राही शिवपथ को, हमको भी राह दिखाते हो।
जिनवाणी के प्रस्तोता बन, आगम में सृष्टि बनाते हो।।
अब तक भटके हैं हे गुरुवर, विषयों में समय गंवाया हैं।
नर-जन्म महादुर्लभ मिलता, जिसको क्षण-क्षण ठुकराया हैं।।
हे गुरुवर शिवपथ पर चलकर, तुमने जो रूप संवारा है।
यह तीन लोक में अनुपम हैं, और अन्य न सुख का दाता है।।
इसीलिए किरण बनकर गुरुवर, हम सबको सदा जगाया है।
जिनवाणी के कदमों पर चल, मुक्ति का मार्ग दिखाया है।।
तुम सचमुच ही अमृत लेकर, विष वमन कराने आए हो।
हैं जीर्ण रोग मम अस्थि में, जिसकी औषध तुम लाये हो।।
पाकर के निर्मल गुरुवर को, तुम नयनसागर कहलाए हो।
हैं भाग्य सभी हम भव्यों के, जो ऐसे गुरु हमने पाये।।
इनकी तो महिमा हैं न्यारी, जीवन पुस्तक जो सदा खुली।
जब चाहो सभी पीयूष पियो, हर लो दुःख तुम दुःख अतिभारी।।
यह भाव भक्ति हैं कीर्तन है, शब्दों का जोड़ बनाया है।
निज अंतर की वीणा से ये, बिन छंदों के ही गाया हैं।।
हे उपाध्याय नयनसागर, चरणों में तेरे हो प्रणाम।
बस चन्द्र सूर्य की राहों पर, शाश्वत विचरों बनकर महान्।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य उपाध्याय श्री नयनसागर गुरवे जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण गाऊँ उस ज्ञान के नयन जिनके साथ।
भव सागर को तैर के पाऊँ पूर्ण प्रकाश।।